सद्गुरू शान्ति प्रकाश चालीसा

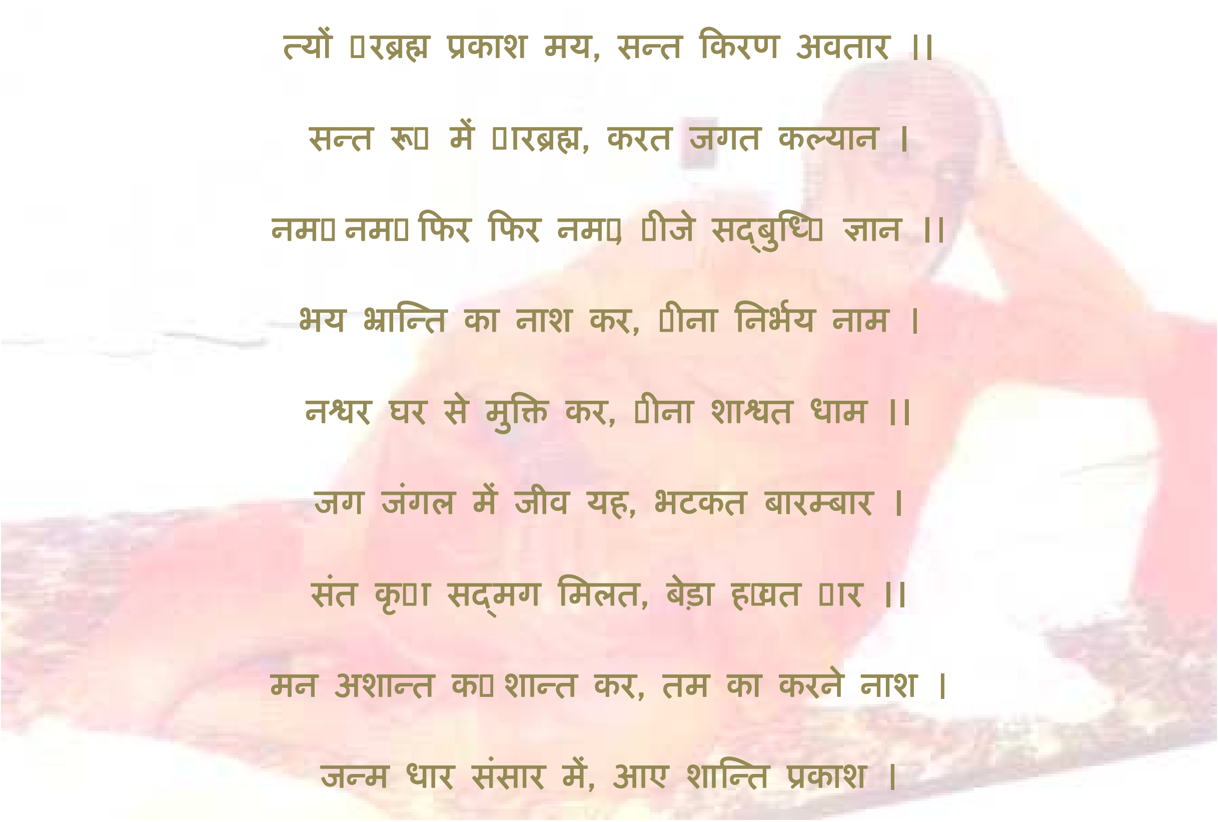

जय जय जय जगदीश जय, बारम्बार प्रणाम ।

तव महिमा का पार नहिं, गावत ग्रन्थ तमाम ।।

सूर्यदेव की ज्यों अहै, किरण अनन्त अपार ।

त्यों पारब्रह्म प्रकाश मय, सन्त किरण अवतार ।।

सन्त रूप में पारब्रह्म, करत जगत कल्यान ।

नमो नमो फिर फिर नमो, दीजे सद्बुद्धि ज्ञान ।।

भय भ्रान्ति का नाश कर, दीना निर्भय नाम ।

नश्वर घर से मुक्ति कर, दीना शाश्वत धाम ।।

जग जंगल में जीव यह, भटकत बारम्बार ।

संत कृपा सद्मग मिलत, बेड़ा होवत पार ।।

मन अशान्त को शान्त कर, तम का करने नाश ।

जन्म धार संसार में, आए शान्ति प्रकाश ।

बन्धन माया का कटे, छाड़ी जग की आश ।।

गुरू आश्रय ले मुक्त हुए, सतगुरू शान्ति प्रकाश ।

पूर्व जन्म के पुण्य ते, गुरू मिले सुखधाम ।

निर्मोही निष्काम चित्त, सत्गुरू टेऊँराम ।।

सिन्धु देश सन्तो की धरती, भाव भक्ति से जन को भरती
सिन्धु देश के वासी निर्मल, याद प्रभू को करते पल पल
सतसंग स्मरण होता घर घर, भाग्य वान ले जन्म वहां पर
पावन सिन्धु देश के मांहीं, चक नाम नगरी थी ताहीं
चकवासी प्रभु नाम उच्चारें, सहज सरल जीवन को धारें
तां में हरी भक्त इक रहता, मुख से राम नाम नित कहता
नाम आसुदाराम प्रकट था, जीवन में थी सत्य सरलता
धर्ममयी थी तांकी नारी, देवी जुगल जगत से न्यारी
तां घर में चमकी एक ज्योती, देख देख मां हर्षित होती
निरख निरख बालक सुख रासी, हुए प्रसन्न नगर के वासी
ब्राह्मण कहा भाग्य अति भारी, बालक जन्मा मंगलकारी
निज कीर्ति जग में प्रकटावहिं, सद्कर्मों से यश को पावहिं
बालक राम नाम नित गावे, मात पिता अति सुख को पावे
घर में सन्त सेव नित कर हैं, बर्तन मांझे पानी भर हैं
सन्त दरश हित मनुवा व्याकुल, और न भावे जग की हलचल
नयन सन्त का दरश निहार□ जिव्हा नित हरि नाम उच्चार□
कर्ण सुने नित कथा प्रसंगा, पाद चले जहं हो सत्संगा
सर्वेन्द्रिय तजे सब लगना, सर्वेश्वर में होयी मगना
सतसंग सुमरन में चित्त लागा, विषय वासना से मन भागा
बाह्य नयन भए ज्योती हीना, तब भी मन हरि गुन में भीना
दूज चन्द्र ज्यों लगन बढ़े नित, जगतर से उपरामा भया चित्त
गुरू मिलन की अति अभिलाषा, मनुवा जग ते भया निराशा
टन्डा आदम में तब आकर, गद्गद् भये गुरू को पाकर
महा विरक्त महा वड़भागी, सत्गुरू मिले हरी अनुरागी
निर्मोही निर्मल निष्कामी, सत्गुरू टेऊँराम स्वामी

चरन कमल में वन्दन कीन्हा, तन मन सब अर्पण कर दीन्हा

श्रध्दा से कीन्हा प्रणामा, सत्गुरू दीजे निर्मल नामा

नाम आपका सब दुख हारी, महिमा ताकी है अति भारी

बाह्य ज्योती का नहिं मैं कामी, अन्तर्ज्योति जगाओ स्वामी

ज्ञान देही प्रभु करो उध्दारा, सत्गुरू हूँ मैं दास तुम्हारा

गुरू आज्ञा से सेवा माहीं हो गए मगन रैन दिन ताहीं

गुरू कृपा से अन्तः करणा, निर्मल भया ध्याइ गुरू चरणा

दीक्षा सत्गुरू ने तब दीनी, सुरती गुरू शब्द में भीनी

दिव्यानन्द परम को पाकर, धन्य भए पाया आतम घर

सिन्ध हिन्द घूमा तब सारा, हरी नाम का किया प्रचारा

सत्गुरू जभी भए ब्रह्मलीना, नश्वर इस तन को तज दीना

गुरू गद्दी पर तभी बिराजा, सत्गुरू सर्वानन्द महाराजा

तामें रख पूरण विश्वासा, श्रध्दा से कहलाया दासा

सत्गुरू सर्वानन्द स्वामी, त्याग देह जब भए विश्रामी

ता पीछे सब कार्य सम्भाला, घर घर नाम का किया उजाला

पर उपकर से प्रीत बढ़ायी, जन कल्याण अटल रति लायी

दीन जनों का दुःख मिटाया, जन में जगदीश्वर को पाया

कर्म शील रहे पूरा जीवन, पर स्वार्थ में दीना तन मन

ऐसे योगी सन्त निराले, पाते हैं कोई किस्मत वाले

जिन का पावन करके दर्शन, मिलती शान्ती मन हो प्रसन्न

शनिवार गुरू दिवस को, गुरू चरणें किया वास ।

तन त्यागा पर यश अमर, धन गुरू शान्ति प्रकाश ।।

अमरापुर निज धाम से, आए थे सुखराश ।

अमरापुर में लीन हुए, सत्गुरू शान्ति प्रकाश ।।

जब तक चन्दा गगन में, जब तक सूर्य आकाश ।

तब तक तव लीला अमर, सत्गुरू शान्ति प्रकाश ।।

चालीसा सुख रूप यह, दुख का करे विनाश ।
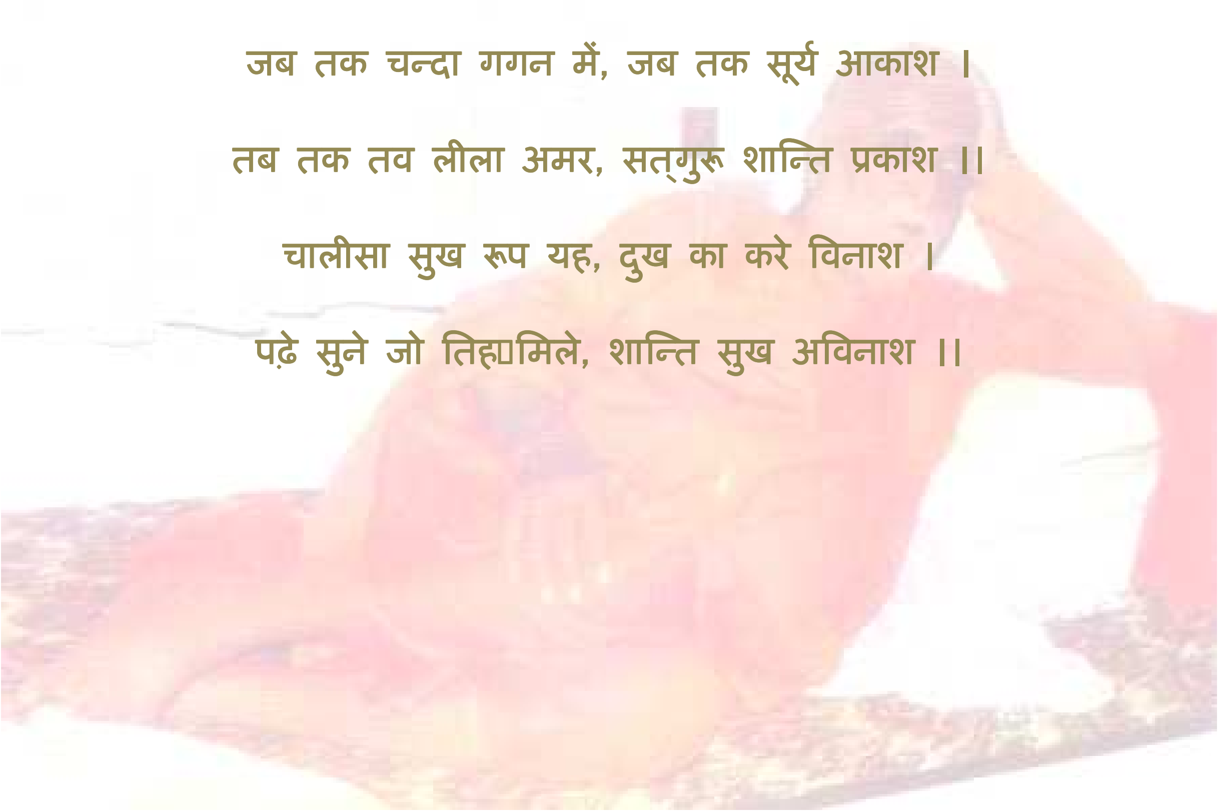
पढ़े सुने जो तिह□मिले, शान्ति सुख अविनाश ।।